बाप की डायरेकशन है मुझे चलते- फिरते करो याद
तो ही बनता हूँ मैं तुम्हारा रेस्पोंसिबल
गुणवान वो जो कांटो को फूल बनाने की करते सेवा
दुःख देना है काँटा लगाना
बाप की याद में रहना प्रफ्फुलित
अपनी मगरूरी नही दिखाना
कोई भी उल्टा कर्म नही करना
मूँझना भी नही
संकल्प रूपी बीज न जाये सार से खाली
हर संकल्प आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति हो शुभ भावना वाली
माया के झमेलों से घबराना नहीं
परमात्म मेले की मौज मानते रहना सभी

मेरा बाबा !!!
ॐ शांति !!!